श्रीमते रामानुजाय नमः

(Thiruppavai)

समर्पण

श्रीमद्भगवतो प्राकुंशाचार्यजी महाराज

This is an excellent piece of Tamil composition by *Andal*. She is variously known by her other names *Godamma, Godai*, and is one among twelve *azhwars* (*alwars*) of srivaishnavite devotional cult. Her father *Vishnuchitt Swamy* is also one among the twelve illustrious *azhwars*. He got her in *tulsi* (basil) garden when he was engaged in doing the maintenance work of the grove and procure tulsi and flowers for the worship of *vatpatrashayi swamy*. *Andal's* advent place is *Srivilliputtur* which is about 80 km from Madurai in Tamil Nadu (India).

She, toeing the line of her father, was fully dedicated to the worship of the Lord *Narayan*. While assisting her father, whatever flower garland she was preparing everyday to be offered to the deities, she used to put them first on her own body around the neck and look into a mirror to ascertain whether they were properly prepared to enhance the deities' grandeur. Once her father *Vishnuchitta Swamy* noticed this, and with great anguish, he didn't offer that day any garland to the deities as he considered them defiled by her because she wore them before they were offered to the deities. To his utmost surprise, he got a dream at night *Narayan* commanding him to offer the garlands prepared and tested by *Andal* only. He could then realize that there was something special in her. With utmost awe, very carefully, he brought her up.

Coming of marriageable age, she rejected offer of marriage to any human being and offered to marry only Lord *Narayan* Himself. Lo and behold! The head priest of *Rangnath Swamy* temple, *SriRanagam* (Trichirapalli) had a dream instructed by the Lord to send a palanquin to *Srivilliputtur* to fetch her and offer her as His consort. Grand procession was organized and she was taken to Lord's sanctum sanctorum with due reverence. No sooner she entered the sanctum than her physical form immersed in the deity's Himself.

In *Srivilliputtur* the *Andal's* temple was raised by her father (also called *Periya azhwar*). Later the *pandya* king Vallabhadeva is said to have built around 789 AD the present temple. Great poet, *Kavichakravarti* Kamban has also sung the glory of the *gopuram* of *Srivilliputtur* in one of his writings.

Thiruppavai is learnt to have been composed by *Andal* when she was quite young, and is being recited in all srivaishnavites temples early morning in the *dhanurmas (*sun remains in 9th zodiac sign, sagittarius*)*, month of *Margshirsh* and *Paush*. At Tirumala, Tirupati, *suprabhatam* for all the thirty days of the said month is replaced by the recitation of *Thiruppavai* only.

The word *Thiruppavai,* among several acknowledged popular meanings, may literally be taken to mean **श्रेष्ठ पर्व -** *shreshtha parva* (grand festival). However, another pertinent meaning, "*thiru*" means respectful, and "*ppavai*" means marriageable girl, is also widely accepted. For inner and deeper meaning of the verses one may refer several publications available on various websites.

There are 30 verses, and they depict how to observe the vow in *Dahanur mas* in honour of Srikrishna. The period of thirty days of vow begins from the full moon night of *Margshirsh* month onwards. The observance of sacred vow is similar to "*katyayani vrat* **कात्यायनी व्रत** " described in *srimadbhagwat mahapuran* (*skandh* 10, *adhyaya* 22). The *gopi* of *Vrindavan* observe this vow to attain Srikirshna as husband and visit the river Yamuna for bath in early morning before sunrise. In *thiruppavai* also, in a similar fashion, *Andal* knocks the doors of all of her girl friends in the wee hour to move to the river Yamuna for bath. Gathering the friends and reminding them about the glory of Srikrishna are the contents of first 1 – 15 verses. They take a vow not to eat (verse 2) ghee and milk, avoid collyrium in the eyes, and flowers in the hair lock for all the thirty days. Thereafter they go to wake up Srikrishna. In the verse 16 the guards of Nandgop are requested to open the door. Verse 17 wakes up Nandgop, Yashoda, Srikrishna, and

Baldeva. Verses 18 – 20 wake Nappinai, the consort of Srikrishna. Verses 21 – 25 are direct audience to Srikrishna. Besides singing the glory of *Trivikram* (verse 3, 17, 24), milky ocean *Padmanabha* (verse 2, 4, 6), *Raam* (verse 10, 12, 13), and Srikrishna (in most of the verses), the glory of *Lakshmi-Nrisimha* is mentioned specially in verse 23. The solicitations are placed from verses 26-29 to the Lord. In verse 26 the age old tradition of the vow is mentioned which she has carried forward as a practice from her forefathers. The last verse is about *Andal* herself wherein she concludes with the glory of the *vrata.*

The Hindi translation is being attempted to benefit the devotees not familiar with Tamil. The sequence of words has been attempted to be maintained similar to the original Tamil composition. The words within quotes “ “ in Hinid version of the verses, are not in the original Tamil text, and simply intend to facilitate better understanding of the context.

तिरूप्पावै श्रीवैष्णव भक्ति साहित्य की एक अनुपम कृति है।इसके रचियता अन्डाल स्वयं लक्ष्मी के अवतार के रूप में जानी जाती हैं। इनका अवतार स्थल श्रीविल्लीपुत्तुर है जो तमिलनाडु में मदुरै से 80 कि . मी . की दूरी पर है। अन्डाल और इनके पिता श्री विष्णुचित्त स्वामी बारह आलवारों में आते हैं। सीता की तरह अन्डाल भी पृथ्वी से निकली हैं। श्रीविष्णुचित्त स्वामी अन्डाल को तुलसी के बागीचे में पाये थे । भगवान की सेवा के लिये माला बनाने में अन्डाल अपने पिता की सहायता किया करती थीं। पिता की अनुपस्थिति में माला की सुन्दरता को ये स्वयं गले में धारण कर आइने में देखकर परखती थीं । एक दिन पिता ने इस चीज को देख लिया और दुःखी मन से माला को अपवित्र समझ उस दिन भगवान को कोइ माला अर्पित नहीं किया। भगवान ने इन्हें स्वप्न देकर अन्डाल के पहने हुये माला को हीं चढ़ाने का निर्देश दिया। उस दिन से श्रीविष्णुचित्त स्वामी अन्डाल को अवतार के रूप में देखने लगे। जब ये विवाह योग्य हुई तव अन्डाल ने श्रीरंगनाथ भगवान से ही संबंध बानाने का निश्चय किया। भगवान श्रीरंगनाथ के निर्देश से अन्डाल को डोली में सजाकर भगवान के मंदिर में अतिउत्साह पूर्वक लाया गया। तदुपरान्त अन्डाल ने अपने को भगवान की सन्निधि में तिरोहित कर दिया।

श्रीमद्भागवत महापुराण के स्कंध 10 के अध्याय 22 की कात्यायनी व्रत की तरह अन्डाल धर्नुमास में 30 दिन व्रत करती थीं जिसका उद्देश्य श्रीकृष्ण को पति के रूप में प्राप्त करना था। तिरूप्पावै के 30 पाशुर इसी प्रयास का सजीव चित्रण है। पाशुर 1 में अन्डाल अपनी सखियों को सूर्योदय से पूर्व जागकर स्नान कर पूजा के लिये आमन्त्रित करती हैं तथा पाशुर 2 में नियमों के पालन का विवरण है जिसके अनुसार इस अवधि मे दूध घी का त्याग कर जूड़े में फूल नहीं बांधना तथा भक्ति साहित्य का पाठ करते हुए संतजनों को सम्मान तथा दान करना है। पाशुर 3 एवं 4 में भगवान की महत्ता तथा व्रत के फल चित्रित हैं। पाशुर 5 में पूजा की विधि का वर्णन है। पाशुर 6 से 15 तक सखियों को जगाने का वर्णन है। पाशुर 16 में नंद जी के राजमहल के द्वारपाल को जगाया जाता है। पाशुर 17 में नंदजी, यशोदा, बलराम तथा श्रीकृष्ण को जगाया जाता है। पाशुर 18 से 20 तक भगवान श्रीकृष्ण की सहभागिनी नप्पिनाय जो नीला देवी हैं , को जगाया जाता है। 21 से 23 पाशुर तक भगवान से बातचीत को चित्रित किया गया है। पाशुर 24 से 29 तक भगवान की प्रार्थना तथा पूजा व्रत के उद्देशय से भगवद कैंकर्य करने का आश्वाशन प्राप्त कर उत्साह की पूर्णाहति में घी उत्पलावित खीर समर्पित कर श्रृंगार कर

भगवान का चिर सन्निधि प्राप्त करना है। पाशुर **29** तो पूर्ण समपर्ण और शरणागति को चित्रित करता है जो वैष्णवता तथा उसकी प्रपन्नता का द्योतक है। पाशुर **30** में अन्डाल ने स्वयं को फलदायी तिरूप्पावै को रचने वाली बताती हैं।

तिरूप्पावै के कई शाब्दिक अर्थ हैं। जो ज्यादा लोकप्रिय है वह है "श्रेष्ठ व्रत"। एक और सटीक अर्थ है । "तिरू" यानि "सम्मानजनक" **,** और "प्पावै" यानि "विवाह योग्य कन्या"। तिरूप्पावै में भगवान नारायण के विभिन्न अवतारों का यशोगान किया गया है । त्रिविक्रम भगवान को पाशुर **3, 17** एवं **24** में**,** क्षीरसागरशायी भगवान को **2, 4** एवं **6** में**,** राम को **10, 12, 13** में**,** तथा श्रीकृष्ण को कईयों में चित्रित किया गया है। श्रीलक्ष्मी नृसिंह को पाशुर **23** मे विशेष रूप से वर्णित किया गया है।

अन्डाल का तिरूप्पावै दिव्य प्रबंध का एक महत्वपूर्ण भाग है। इसके अतिरिक्त अन्डाल का **143** पाशुर की "नाच्चियार तिरूमोलि" भी दिव्य प्रबंध का एक हिस्सा है। नाच्चियार तिरूमोलि का एक भाग है "वार्णम अयराम" जिसमें अन्डाल ने भगवान श्रीकृष्ण से विवाह के विभिन्न कार्यक्रमों का सजीव चित्रण किया गया है और जो "सप्तपदी" पर जाकर पूरा होता है।तमिल नाडु के प्रत्येक परिवार मे वर वधू के कल्याणार्थ विवाह के अवसर पर "वार्णम अयराम" का विधिवत पारायण आवश्यक रूप से किया जाता है।

1	अगहन मास, पूर्णिमा का शुभ दिन स्नान "यमुना" चाहे वो चले, सुसज्जित बालायें सुन्दर भव्य आयपादी "वृन्दावन" की ऊच्चाभिलाषी बालायें तेज भुजाल निष्ठुर कार्य "दुष्टों के नाश हेतु" वाले नंदगोपन, के कुमार सुन्दर आँखोंवाली यशोदा के मृगशावक श्याम वदन, सुन्दर ऑखें जगमग दिनकर, चाँद सा मुख नारायण स्वयं हम पर कृपा करेंगे संसार से प्रशंसित स्नान, आओ श्रीव्रत करें ।	मार्गळि त्तिङ्गळ् मदि निरैन्द नन्नाळाल्⋆ नीराड प्पोदुवीर् पोदुमिनो नेरिळैयीर्⋆ शीर् मल्गुम् आयप्पाडि च्चैल्व च्चिरुमीर्गाळ्⋆ कूर्वेल् कॊडुन्दॊळिलन् नन्दगोपन् कुमरन्⋆ एरार्न्द कण्णि यशोदै इळञ्जिङ्गम्⋆ कार्मेनि च्चॆङ्गण् कदिर्मदियम् पोल् मुगत्तान्⋆ नारायणने नमक्के परै तरुवान्⋆ पारोर् पुगळ प्पडिन्देलोर् एम्बावाय्॥१॥
	प्रथम पद निमंत्रण का है। गोदम्मा अपने नजदीकी सखियों को पवित्र व्रत के लिए उत्साहित करती हैं। धनुर्मास का यह व्रत प्रातःकाल में यमुना स्नान का है। प्रारंभ का दिन अगहन यानि मार्गशीर्ष के पूर्णिमा का है जो प्रायः धनुर्मास (जब सूर्य धनु राशि में हो) के प्रारंभ काल के आसपास होता है। इससे यशोदा के लाड़ले पुत्र सुन्दर सलोने कृष्ण प्रसन्न होंगे। नन्दजी इनकी रक्षा में निष्ठुर होकर तत्पर रहते हैं। कोई भी छोटी सी छोटी घटना से कृष्ण की रक्षा के लिए सदा हाथ में भुजाल (तेज भाला) लिए तैयार रहते हैं। कृष्ण तो स्वयं नारायण हैं, और इस व्रत की पूर्त्ति में, इनका आशीर्वाद हमें अवश्य मिलेगा।	
2	संसार में जन्म पाया, अपने इष्टदेव हेतु सुनो, क्षीरसमुद्र के योगनिद्रासायी नाथ चरणों की वन्दना गायें घी नहीं खायें, दूध नहीं खायें, प्रातः स्नान करें काजल न लगायें, जूड़ा फूल न बाधें त्याज्य कार्य न करें, मिथ्या कहानी न पढ़ें योग्य जनों, दीन जनों, संतों "को" दान दें अपना उद्धार सोचें, प्रसन्न रहें, आओ श्रीव्रत करें ।	वैयत्तु वाळ्वीर्गाळ्! नामुम् नम् पावैक्कु⋆ शॆय्युम् किरिशैगळ् केळीरो⋆ पार्कडलुळ् पैयत्तुयिन्र परमनडि पाडि⋆ नॆय्युण्णोम् पालुण्णोम् नाट्काले नीराडि⋆ मैयिट्टॆळुदोम् मलरिट्टु नाम् मुडियोम्⋆ शॆय्यादन शॆय्योम् तीक्कुरळै च्चॆन्रोदोम्⋆ ऐयमुम् पिच्चैयुम् आन्दनैयुम् कैकाट्टि⋆ उय्युमारॆण्णि उगन्देलोर् एम्बावाय्॥२॥
	द्वितीय पद में गोदम्मा बताती हैं कि जीवन की सार्थकता प्रभु की चरण बन्दना में है। नारायण हरि क्षीर सागर में योगनिद्रा में लीन	

<table>
<tr><td></td><td colspan="2">हैं। दोनों पार्श्व में भू देवी एवं नीला देवी सेवारत हैं। श्रीचरणों में मन को समर्पित करने के ऊपाय स्वरूप बताती हैं कि व्रत के दिनों में दूध घी का त्याग कर दें। इससे मन का आलस दूर होगा।श्रृंगार के साधन, जूड़ा में फूल, और आंखों में काजल, का भी त्याग कर दें। भगवत कथा के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों को न पढ़ें। संत पुरूषों एवं याचकों की सेवा में यथा शक्ति दान दें। इस तरह से प्रसन्न रहकर श्रीव्रत करें।</td></tr>
<tr><td>3</td><td>बढ़ कर, संसार मापा, सर्वोत्तम नाथ का नाम गायें
अपना श्रीव्रत “का” करें स्नान
दुष्टों से रहित देश पूरा “होगा” , माह में तीन वर्षा होगी
बढ़ेंगे बड़े धान के खेत, छोटी मछलियाँ खेलेंगी
सुन्दर फूलों में चकमक मधुमक्खियां सोयें
स्थिर गायें खड़ी, गोप दूहें, थन पकड़ कर
वर्त्तन भरें, उदार बड़ी गायों से
टिकाऊ ऊन्नति, परिपूर्ण रहें, आओ श्रीव्रत करें ।</td><td>ओङ्गि उलगळन्द उत्तमन् पेर् पाडि
नाङ्गळ् नम् पावैक्कु च्चाट्रि नीर् आडिनाल्
तीङ्गिन्ऱि नाडॆल्लाम् तिङ्गळ् मुम्मारि पॆय्दु
ओङ्गु पॆरुञ्जॆन्नॆल्लूडु कयल् उगळ
पूङ्गुवळै प्पोदिल् पॊऱिवण्डु कण्पडुप्प
तेङ्गादे पुक्किरुन्दु शीर्त्त मुलै पट्रि
वाङ्ग क्कुडम् निऱैक्कुम् वळ्ळल् पॆरुम् पशुक्कळ्
नीङ्गाद शॆल्वम् निऱैन्देलोर् एम्बावाय्॥ ३॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">तृतीय पद में त्रिविक्रम भगवान यानि वामन भगवान की महत्ता का स्मरण कराते हुये बताती हैं कि इनकी असीम कृपा से संपन्नता सद्यः आयेगीं। महीना में तीन बार वर्षा होगी। पृथ्वी धान की फसल से पूर्ण होगी। जल की पर्याप्तता में छोटी मछलियां आनन्दित रहेगीं। गोदम्मा चाहती हैं कि मछली बनकर वे निरंतर सागरशायी प्रभु का दर्शन करती रहें। मधुमक्खी बनकर फूल में ही सो जाना चाहती हैं। यह फूल प्रभु की श्यामल सौंदर्य का है जिसमें चिरकाल के लिये बन्द हो जाना चाहती हैं। स्थायी संपन्नता को चित्राकिंत करते हुए कहती हैं कि स्थिर गायें निरंतर दूध देंगी।सभी पात्र दूध से उत्पलावित रहेंगे।वास्तव में वे, अनंतशायी प्रभु के क्षीर समुद्र में आत्मसात हो जाना चाहती हैं।</td></tr>
<tr><td>4</td><td>समुद्र व वर्षा के नाथ, कुछ नहीं रोकें
समुद्र करें प्रवेश पानी ले, गरजते ऊपर उठें
जगत के मुख्य नाथ स्वरूप जैसा शरीर श्याम
चौड़ा सुन्दर कंधा, पद्मनाभ हाथों “ में “</td><td>आऴि मऴैक्कण्णा ! ऒन्ऱु नी कै करवेल्
आऴिउळ् पुक्कु मुगन्दु कॊडार्त्तेरि
ऊऴि मुदल्वन् उरुवम् पोल् मॆय् करुत्तु
पाऴियन् तोळुडै प्पर्पनाबन् कैयिल्</td></tr>
</table>

	चक्र जैसी बिजली "चमके ", शंख जैसी गर्जन बिना देर के, बाण जैसी वर्षा ऊन्नत संसार हेतु हो, हम भी अगहन माह स्नान "का " आनन्द लें, आओ श्रीव्रत करें ।	आऴिपोल् मिन्नि वलम्बुरिपोल् निन्ऱदिर्न्दु★ ताऴादे शार्ङ्गम् उदैत्त शरमऴै पोल्★ वाऴ उलगिनिल् पॆय्दिडाय्★ नाङ्गळुम् मार्गऴि नीराड मगिऴ्न्देलोर् एम्बावाय्॥ ४॥
	चतुर्थ पद में, वर्षा के बादल का स्वरूप, प्रभु की श्यामलता, का स्मरण कराता है। बादल का गर्जन, पाञ्चजन्य के घोष का, और चमकती बिजली, सुदर्शन चक्र की प्रभा को, याद दिलाते है। वर्षा की बौछार भगवान राम के तीखे बाणों के समान रमनीक दिखते हैं। गोदम्मा का यह पद सर्वव्याप्त प्रभु के लिये प्रेम जागृत करता है।	
5	लीलादेव मथुरा किशोर पवित्र यमुना, गोपों का आश्रय पवित्र ज्योति, मातृ यश वृद्धिकारक दामोदर की पूजा, ताजा एवं सुगंधित पुष्प से करें , पूजा नमन एवं, हम कीर्तिगान ध्यान करें, आगत अनागत सारे पाप तृणवत जलें, उनके नाम से, आओ श्रीव्रत करें ।	मायनै मन्नु वडमदुरै मैन्दनै★ तूय पॆरुनीर् यमुनै त्तुऱैवनै★ आयर् कुलत्तिनिल् तोन्ऱुम् अणि विळक्कै★ तायै क्कुडल् विळक्कम् शॆय्द दामोदरनै★ तूयोमाय् वन्दु नाम् तूमलर् तूवि त्तॊऴुदु★ वायिनाल् पाडि मनत्तिनाल् शिन्दिक्क★ पोय पिऴैयुम् पुगुदरुवान् निन्ऱनवुम्★ तीयिनिल् तूशागुम् शॆप्पेलोर् एम्बावाय्॥ ५
	यमुना किनारे के किशोर दामोदर भगवान हैं।ऊखल में रस्सी से मां यशोदा ने इन्हें बांधकर दामोदर नाम से प्रसिद्ध कर दिया। गोपजनों के सहारा एवं अपनी मां देवकी तथा यशोदा के यश को बढ़ाने वाले हैं। इनकी पूजा पूर्व एवं भविष्य के सारे पापों को नाश करने वाले हैं। इनकी पूजा में सुगंधित फूल का अर्पण तथा प्रेम से उनका यशगान पर्याप्त है।	

6	पक्षी कलरव कर रहे, पक्षिराज आरोही "के" मंदिर में श्वेत शंख नाद कर रहे, सुन नहीं रहे जागो बच्चों, राक्षसी के विषैले स्तन पान किया शकट "छली " का ठोकर "पैरों " से नाश किया क्षीर सागर शेषसायी, जीवन स्त्रोत " हैं " संतों योगियों " के " " उन " का शनैः शनैः ध्यान टूटा, "उनके " हरिनाम के ऊच्च स्वर हृदय में प्रवेश कर रहे, व आनंद दे रहे, आओ श्रीव्रत करें ।	पुळ्ळुम् शिलम्बिन काण् पुळ्ळरैयन् कोयिल्* वॆळ्ळै विळि शङ्गिन् पेररवम् केट्टिलैयो* पिळ्ळाय्! एळुन्दिराय् पेय्मुलै नञ्जुण्डु* कळ्ळ च्चगडम् कलक्कळिय क्कालोच्चि* वॆळ्ळत्तरविल् तुयिल् अमर्न्द वित्तिनै* उळ्ळत्तु क्कॊण्डु मुनिवर्गळुम् योगिगळुम्* मॆळ्ळ एळुन्दरि एन्र पेररवम्* उळ्ळम् पुगुन्दु कुळिर्न्देलोर् एम्बावाय्॥६॥
	पहले के पांच पद भगवान के रूप और नाम के यशोगान का है। छठे से पन्द्रह तक के पद गोदम्मा द्वारा अन्य सखियों को जगाने के प्रयास का है। प्रातःकाल के आगमन को प्रमाणित करते हुए अनेकों उदाहरण देकर गोदम्मा अपनी सखियों को जगाती है। पक्षियों की आवाज, पक्षीराज गरूड़ के सवारी नारायण के मंदिर में शंखनाद, तथा योगी जन का ध्यान टूट कर हरिनाम उच्चारण की आवाज, हृदय को आनंदित कर रहे हैं। क्षीरसागर के अनंतशायी भगवान ने ही पूतना एवं शकटासुर का नाश नंदकिशोर के रूप में किया।	
7	भरद्वाज " अळियन " पक्षियों की चहक बोलती भाषा, सुने नहीं, गूंगी लड़कियों गले के आभूषणों के किंकिण शब्द जूड़ा फूलों के सुगंध, मंथन दही का घोष, मिला नहीं नेता किशोरियों के, नारायण की मूर्ति व केशव का गुणानुवाद, सुनती नहीं, सो रही हो सुन्दरियों, खोलो "दरवाजा", आओ श्रीव्रत करें ।	कीशु कीशॆन्रॆङ्गुम् आनैच्चात्तन्* कलन्दु पेशिन पेच्चरवम् केट्टिलैयो पेय् प्पॆण्णे* काशुम् पिरप्पुम् कलकलप्प क्कै पेर्त्तु* वाश नरुम् कुळल् आय्च्चियर्* मत्तिनाल् ओशै पडुत्त तयिर् अरवम् केट्टिलैयो* नायग प्पॆण्पिळ्ळाय्! नारायणन् मूर्त्ति* केशवनै प्पाडवुम् नी केट्टे किडत्तियो* तेशम् उडैयाय्! तिर्वेलोर् एम्बावाय्॥७॥
	सातवें पद में प्रातः काल के पूर्ण आगमन के सारे लक्षणों का वर्णन है। पक्षियों की चहक (केशु केशु बोल रही हैं जो	

<table>
<tr><td></td><td colspan="2">केशव का छोटा नाम है), घर में अन्य लड़कियों की कियाशीलता से होने वाले शब्दों को तो सुनो। जागकर ब्यस्त होने से, घर के अन्य महिलायों के सिर के जूड़ा के फूल, हिलडुलकर सुगंध विखेर रहे हैं, तथा उनके आभूषण के मधुर आवाज मनोहर हैं। क्या ये भी जगाने के लिये पर्याप्त नहीं हैं। घर में मथे जाने वाले दही की हांडी की आवाज नहीं सुनती! ओ प्रमुख सखी! भगवान नारायण एवं केशव (केशी राक्षस का मुंह फाड़ने वाले) का नामगान भी नहीं सुनती!</td></tr>
<tr><td>8</td><td>पूरब का आकाश श्वेत हो रहा, गायें
सर्वत्र चर रहीं, व्रत के उत्सुकता से जाने वाली
को रोक, तुम्हारी प्रतीक्षा है
पुकारें, खड़े हैं खुश
जागो बाले, गाते व्रत मनाते हुए
जो घोड़ा राक्षस का मुँह फाड़ा, योद्धाओं “कंस के“ को पराजित किया
देवाधिदेव की अर्चना करें
द्रवित होकर “ वे “ कुशल क्षेम पूछें, आओ श्रीव्रत करें ।</td><td>कीऴ्वानम् वॆळ्ळॆन्ऱॆरुमै शिऱु वीडु*
मेय्वान् परन्दन काण् मिक्कुळ्ळ पिळ्ळैगळुम्*
पोवान् पोगिन्ऱारै प्पोगामल् कात्तु* उन्नै-
क्कूवुवान् वन्दु निन्ऱोम्* कोदुगलम् उडैय
पावाय्! एऴुन्दिराय् पाडि प्पऱै कॊण्डु*
मावाय् पिळन्दानै मल्लरै माट्टिय*
देवादि देवनै च्चॆन्ऱु नाम् शेवित्ताल्*
आवा एन्ऱारायन्दरुळेलोर् एम्बावाय्॥८॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">गोदम्मा इस आठवें पद में सुवह होने के अन्य और लक्षणों को बताती हैं। पूरब दिशा का आकाश साफ दिखरहा है, गायें चरने के लिए बाहर आ चुकी हैं (अगर नहीं जागोगी तो कृष्ण दर्शन के लाभ से बंचित रह जाओगी क्योंकि वे शीघ्र हीं गायों के पीछे जंगल चले जायेगें)। अन्य सखियां आ चुकी हैं, हम उन्हें तुम्हारे लिये रोक रखे हैं। चलो जागो और देवताओं के सिरमौर, जिन्होनें केशी घोड़ा राक्षस का मुंह फाड़ा, कंस के पहलवानों को ध्वस्त कर दिया, की पूजा करें। वे कृपालु हैं, हमारा कुशल अवश्य पूछेगें।</td></tr>
</table>

9	रत्नजटित कक्ष दीपों से प्रकाशित सुगन्धित धूप "अगरवत्ती " की महक में, गद्दे पर सो रही मेरी चाची की बेटी, सुन्दर मणिजड़ित किवाड़ का साकल खोलो चाची, उस लड़की को जगाओ, जो केवल तुम्हारी बेटी है गूंगी है, बहरी है, या थकी है या जादू टोने से सोयी है बड़े जादूगर, माधवन, वैकुंठन के नाम अति फलदायक हैं, आओ श्रीव्रत करें ।	तूमणि माडत्तु च्चुट्रुम् विळक्केरियत्* दूपम् कमळ तुयिल् अणैमेल् कण्वळरुम्* मामान् मगळे ! मणि क्कदवम् ताळ् तिऱवाय्* मामीर् ! अवळै एळुप्पीरो* उन् मगळ् तान् ऊमैयो अन्िऱ् च्चेविडो अनन्दलो* एम प्पेरुन्दुयिल् मन्दिर प्पट्टाळो* मामायन् मादवन् वैकुन्दन् एन्ऱेन्ऱु* नामम् पलवुम् नविन्ऱेलोर् एम्बावाय्॥९॥
	नौवें पद में गोदम्मा एक सर्वसंपन्न (नित्य मुक्त की भांति जो स्वयं आनन्द में मग्न है) सखी को जगाती हैं। घर रत्नों से अलंकृत है, तथा कमरे सुंदर दीपों से प्रकाशित हैं।आरामदायक गद्दे हैं, सुंगधित वातावरण है। किवाड़ खोलने के लिये आग्रह करते हुये चाची (सखी की मां) से निवेदन करती हैं, "इस लड़की को जगाओ। लगता है थकी होगी, या फिर तो बहरी गूंगी हो गयी होगी ? सचमुच सोयी है, या जादू टोने के असर में है?" इसे माधव एवं वैकुंठन भगवान के नाम से अवश्य लाभ होगा।वे बड़े जादूगर भी हैं।	
10	तपश्रम से स्वर्ग जा रही, ओ सजनी ऊत्तर भी न देती, दरवाजा न खोलती सुगंधित तुलसी माला पहने नारायण का यशगान वरदायक है, बहुत पहले एक दिन मृत्युग्रस्त हुआ कुभंकर्ण क्या उसकी लंबी नींद प्रकट हुई, या उसने तुम्हें नींद दी नींद से उत्पीड़ित, सखी रत्न स्थिर चित्त होकर दरवाजा खोलें, आओ श्रीव्रत करें ।	नोट्रु च्चुवर्क्कम् पुगुगिन्ऱ अम्मनाय्* माट्रमुम् तारारो वाशल् तिऱवादार्* नाट्र तुळाय् मुडि नारायणन्* नम्माल् पोट्र प्पऱै तरुम् पुण्णियनाल्* पण्डोरुनाळ् कूट्रत्तिन् वाय्वीळ्न्द कुम्बकरणनुम्* तोट्रुम् उनक्के पेरुन्दुयिल् तान् तन्दानो* आट्र अनन्दल् उडैयाय् ! अरुङ्गलमे* तेट्रमाय् वन्दु तिऱवेलोर् एम्बावाय्॥१०॥
	इस पद में एक प्रमुख सखी को गोदम्मा जगाती हैं। यह नित्य मुक्त की तरह आनंद में मग्न सोयी सी दिखती है, दरवाजा भी न खोलती, और न कोई जबाव देती है। लगता है कुंभकर्ण की नींद इसे सता रही है। भगवान नारायण	

	यानि कि कृष्ण जो गले में तुलसी के माला के सुगंध से उन्मादित हो रहे हैं, के नामगान से ही जागेगी। ओ सखीशिरोमणि! आ दरवाजा खोल।	
11	युवा गायें दुही गयीं दुश्मन विदारक गोपों, की स्वर्णलता सांप के फनजैसी अधोभाग वाली, वन की मोरनी बाहर आओ, सुहृद मित्र सभी कुटुंब आये तुम्हारे आंगन श्याम घन, नाम गान करते न हिलती, न बोलती, सौभगे क्यों सोयी हो, आओ श्रीव्रत करें ।	कट्रुक्करवै क्कणङ्गळ् पल करन्दु★ शॆट्रार् तिऱल् अऴिय च्चॆन्ऱु शॆरु च्चॆय्युम्★ कुट्रम् ऒन्ऱिल्लाद कोवलर् तम् पॊर्कॊडिये★ पुट्रवल्गुल् पुनमयिले ! पोदराय्★ शुट्रत्तु तोऴिमार् एल्लारुम् वन्दु★ निन् मुट्रम् पुगुन्दु मुगिल्वण्णन् पेर् पाड★ शिट्रादे पेशादे शॆल्व प्पॆण्डाट्टि★ नी एट्रुक्कुऱङ्गुम् पॊरुळेलोर् एम्बावाय्॥११॥
	एक अति सुन्दरी मोर जैसी सखी, जो सुगठित शरीर वाली है और अच्छे कुल की है (गायें से संपन्न शक्तिशाली परिवार), जो अपने पिता की स्वर्णलता जैसी लाड़ली है, को जगाते हुए गोदम्मा कहती हैं कि सभी प्यारे मित्र आकर तुम्हारे आंगन में सांवले सलोने कृष्ण का नाम गा रही हैं। जागो न ! हिलो तो सही, कुछ बोल तो, या नित्य मुक्त का आनंद अकेली लेती रहोगी? आनंद का फल सबको बांटने में है।	
12	पुकारती गायें, बछड़ों को स्नेह वश वत्स स्मरण थन सद्यः दूध बहाता भींगा घर पंकिल है दूध से, प्रगतिशील गोप की बहन सिर पर ओस लिए तुम्हारे प्रवेश द्वार के बाहर खड़े दक्षिण लंका के शासक का नास करनेवाले "का " मन हर्षकारी गीत हैं हम गाते, तुम मुँह नहीं खोलते कम से कम जाग तो सही, क्या घोर निद्रा दूसरे घर के सभी लोग भूले नही "जाग गये ", आओ श्रीव्रत करें ।	कनैत्तिळङ्गट्रेरुमै कन्ऱुक्किरङ्गि★ निनैत्तु मुलै वऴिये निन्ऱु पाल् शोर★ ननैत्तिल्लम् शेराक्कुम् नऱ्चॆल्वन् तङ्गाय्★ पनि त्तलै वीऴ निन् वाशल् कडै पट्रि★ शिनत्तिनाल् तॆन् इलङ्गै क्कोमानै च्चॆट्र★ मनत्तुक्किनियानै प्पाडवुम् नी वाय् तिऱवाय्★ इनि त्तान् एऴुन्दिराय् ईदॆन्न पेर् उऱक्कम्★ अनैत्तिल्लत्तारुम् अऱिन्देलोर् एम्बावाय्॥१२॥

	यह पद पूर्ववर्ती पद की तरह ऐसे सखी को जगाने का है जिसका भाई गौरवशाली है। (पूर्व के पद में पिता को संबोधित किया गया है और इस पद में भाई को। बहुत सारी गायें हैं। भाई आवश्यक भगवत कैंकर्य से बाहर गया है। गायें इसी कारण दूही नहीं गयी हैं। गायें बछड़ों को याद कर थन से दूध बहाकर घर को पंकिल कर रहीं हैं।) गोदम्मा कहती हैं कि सुबह के ओस की परवाह किए वगैर हम सभी आये हैं। भगवान राम का गुणानुवाद कर रहे हैं। केवल तुम ही सोयी हो, बाकि सभी लोग जाग चुके हैं।	
13	“वकासुर” पक्षी का मुंह फाड़ा, दुष्ट राक्षस “रावण” का सिर काटा, उनकी कीर्तिगान करते जाते सभी किशोरियाँ श्रीव्रत स्थल पहुँच गये शुक्र ऊग आये, गुरू अस्त हुए पक्षी कलरव करें, देखो सुमनसी सुन्दरी, मृगनयनी कठोर शीतल जल में डुबकी नहीं लगाती सोयी सेज पर, ओ बालिके, अच्छा दिन “है आज” छोड़ युक्ति आलस, हमारे संग, आओ श्रीव्रत करें ।	पुळ्ळिन् वाय् कीण्डानै प्पॊल्ला अरक्कनै★ किळ्ळि क्कळैन्दानै क्कीर्त्तिमै पाडि प्पोय्★ पिळ्ळैगळ् एल्लारुम् पावै क्कळम् पुक्कार्★ वॆळ्ळियॆळुन्दु वियाळम् उऱङ्गिट्रु★ पुळ्ळुम् शिलम्बिन काण् पोदरि क्कण्णिनाय्★ कुळ्ळ क्कुळिर क्कुडैन्दु नीराडादे★ पळ्ळि क्किडत्तियो पावाय्! नी नन्नाळाल्★ कळ्ळम् तविर्न्दु कलन्देलोर् एम्बावाय्॥१३॥
	यह पद एक ऐसी सुन्दर आंखोवाली सखी को जगाने का है जो भगवत आनंद में लिप्त सोयी जान पड़ती है। गोदम्मा बताती हैं कि सुवह का तारा शुक्र उग आये हैं, पक्षियां कलरव कर रही हैं, अन्य सखियां भगवान कृष्ण एवं राम का यशगान करते स्नान को जा चुके हैं। उसे जागकर शीतल जल में स्नान के लिये प्रेरित किया जा रहा है।	

<table>
<tr><td>14</td><td>पिछवाड़े बाग के तड़ाग में
लाल कमल खिल गये, कुमुदिनी सकुचे
केसरिया वस्त्र संत गण
पवित्र मंदिर में शंख वादन हेतु जा रहे
हमें पहले जगाओगी, वादा से बोला था
ओ बाले, जागो, निर्लज्ज बड़बोला
शंख चक्रधारी, वक्षस्थल विशाल
कमलनयन के गीत गायें, आओ श्रीव्रत करें ।</td><td>उङ्गळ् पुऴैक्कडै त्तोट्टत्तु वावियुळ्*
शॆङ्गऴुनीर् वाय् नॆगिऴ्न्दाम्बल् वाय् कूम्बिन काण्*
शॆङ्गऱ्पॊडि क्कूरै वॆण्बऱ् तवत्तवर्*
तङ्गळ् तिरुक्कोयिल् चङ्गिडुवान् पोदन्दार्*
एङ्गळै मुन्नम् एऴुप्पुवान् वाय् पेशुम्*
नङ्गाय्! एऴुन्दिराय् नाणादाय्! नावुडैयाय्*
शङ्गॊडु चक्करम् एन्दुम् तडक्कैयन्*
पङ्गय क्कण्णानै प्पाडेलोर् एम्बावाय्॥१४॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">अब बारी एक ऐसी सखी को जगाने का है जिसने कल वादा किया था कि सब को जगायेगी परंतु सब भूलकर स्वयं सो रही है (बोलने में चतुर है अतः इसको जगाकर ले चलें भगवान कृष्ण को बात से प्रभावित करेगी) । दिन निकलने पर है अब, लाल कमल खिलने लगे तथा कुमुदिनी बंद होने लगी। साधुलोग केसरिया वस्त्र पहने मंदिर में शंख नाद करने के लिए जा रहे हैं। आओ कमलनयन भगवान का हम भी यश गान करें।</td></tr>
<tr><td>15</td><td><u>दो दलों का संवाद एक बाहर 1 एक भीतर 2</u>
आश्चर्य, सुगनी सो रही 1
कठोर वचन मत बोल, मैं शीघ्र आ रही 2
वाक् पटुता से हैं पूर्व अवगत 1
वाग्विवाद में आगे हो, हम हैं वंचित लाभ से 2
शीघ्र चलो और सारे काम हैं 1
सभी जाने वाले आ गये 2 हाँ बाहर आ गिन ले 1
शक्तिशाली हाथी “कुवलयापीठ” संहारे, रण में दुश्मनों को मारे
गजेन्द्र नायक के गीत गायें, आओ श्रीव्रत करें ।</td><td>एल्ले! इळङ्किळिये! इन्नम् उऱङ्गुदियो*
शिल् एन्ऱऴैयेन्मिन् नङ्गैमीर्! पोदरुगिन्ऱेन्*
वल्लै उन् कट्टुरैगळ् पण्डेयुन् वायऱिदुम्*
वल्लीर्गळ् नीङ्गळे नाने तान् आयिडुग*
ऑल्लै नी पोदाय् उनक्कॆन्न वेऱुडैयै*
एल्लारुम् पोन्दारो पोन्दार् पोन्दॆण्णिक्कॊळ्*
वल्लानै कॊन्ऱानै माट्टारै माट्टऴिक्क
वल्लानै* मायनै प्पाडेलोर् एम्बावाय्॥१५॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">सखियों के जगाने का यह अंतिम पद है।भीतर सोयी हुई सखी भगवत आनन्द में निमग्न बतायी जाती है। जब बाहर वालों ने उसके सोने पर आश्चर्य प्रकट किया तो शीघ्र उसने आने का वादा किया। वह बाद बिवाद नहीं करना चाहती और नामभजन का लाभ लेना चाहती है। अतः उसे तुरत बाहर आकर गजेन्द्रउद्धारक और कंश के निष्ठुर हाथी के</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td></td><td colspan="2">संहारक भगवान का यशोगान करने को कहा गया।</td></tr>
<tr><td>16</td><td>रक्षक हमारे नंदगोपन राय के
मंदिर “पुष्पसज्जित” तोरण द्वार, रक्षक
खोलिए रत्न जटित द्वार घुंघुरू संग साकल
यमुना यात्रा उद्घोष हेतु ढोल देने को
नीलमणि नायक कल ही वचन देय
नूतन सज्जित हम आये, जगाने, गाते
पहले पहले “भोर में”, मातृवत दया करें
इंकार न करें, पट खोलें, आओ श्रीव्रत करें।</td><td>नायगनाय् निन्ऱ नन्दगोपनुडैय
कोयिल् काप्पाने !★ कॊडित्तोन्ऱम् तोरण
वायिल् काप्पाने !★ मणिक्कदवम् ताळ् तिऱवाय्★
आयर् शिऱुमियरोमुक्कु★ अऱै पऱै
मायन् मणिवण्णन् नॆन्नले वाय्नेर्न्दान्★
तूयोमाय् वन्दोम् तुयिलॆळ प्पाडुवान्★
वायाल् मुन्नम् मुन्नम् माट्रादे अम्मा★ नी
नेय निलै क्कदवम् नीक्कॆलोर् ऎम्बावाय्॥१६॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">पूर्व के दस पदों में, 6 से लेकर 15 तक, दस सखियों को जगाया गया (अनुमान किया जाता है कि गोदम्मा अपने से पूर्ववर्ती दस आलवारों को जगायी हैं)। सभी अब भगवान कृष्ण के पिता नन्द जी के फाटक पर द्वारपाल से प्रार्थना कर रहे हैं कि प्रवेश का सुन्दर दरवाजा खोलिये। भगवान ने कल हमें यशगान के लिये सुन्दर ढ़ोल (यशोगान रूपी कैंकर्य का उत्तम साधन) देने को कहा था। आप में माता की करूणा है अतः दरवाजा खोल कर हमें अनुगृहित करें। (बिना नाम लिये द्वारपााल से विनती की गयी है। द्वारपाल आचार्यश्री की तरह प्रवेश देने के अधिकारी हैं। सम्मान में आचार्य का नाम नही लिया जाता, उसीतरह यहां द्वारपाल का भी नाम नहीं लिया गया है।पिता का नाम लेना उनके गौरव गाथा है जिससे कि उन्हें भगवान के पिता होने का गौरव मिले।)</td></tr>
<tr><td>17</td><td>वस्त्र, जल, भोजन, खुशी देत
जन नायक नन्दगोप, जागिये
जननायिका कुलदीपिका
सजनी, यशोदा जागिये
गगन भेद, विशाल रूप, मापा त्रैलोक को
देवराय, नींद छोड़ जागिये
स्वर्ण पायल पाद, समुन्नत बलदेव
भ्राता सहित जागिये, आओ श्रीव्रत करें ।</td><td>अम्बरमे तण्णीरे शोऱे अऱम् शॆय्युम्★
ऎम्बॆरुमान् नन्द गोपाला ! ऎऴुन्दिराय्★
कॊम्बनार्क्कॆल्लाम् कॊऴुन्दे ! कुल विळक्के★
ऎम्बॆरुमाट्टि यशोदाय् ! अऱिवुराय्★
अम्बरम् ऊडऱुत्तोङ्गि उलगळन्द★
उम्बर् कोमाने ! उऱङ्गादॆऴुन्दिराय्★
शॆम्बॊर् कऴलडि च्चॆल्वा बलदेवा !★
उम्बियुम् नीयुम् उऱङ्गेलोर् ऎम्बावाय्॥१७॥</td></tr>
</table>

	इस पद में गोपियों का द्वार खुलने के बाद सबों के शयनकक्ष के समीप पहुंचने का आभास मिलता है। वे एक एक कर सब को जगा रही हैं ः- सबके मालिक, अन्न, जल, भोजन तथा खुशी बांटने वाले नन्दगोप जी को, फिर माता यशोदा को, तथा स्वयं भगवान को जिन्होंने तीनो लोक को त्रिविक्रम रूप में माप डाला, और फिर भाई बलदेव जी को, जो अपने पैर में सुन्दर सोने का आभूषण पहने रहते हैं।	
18	दर्शाते उत्साह हाथी का, न भागते "रण से ", शक्तिमान वक्ष स्थल उस नन्दगोप की पुत्रवधू, ओ नप्पिनाय सुगंधित केशवाली, दरवाजा खोलिये जागे, सभी पक्षी पुकारें, देख माधवी शिखर से कुहु करे कोयल, देख गेंद पकड़े उंगलियों से, उन आपके पति का गुन गायें लाल सरोरूह हाथ, कर किंकिणि बाजे, आप आयें, खोलें हर्ष से, आओ श्रीव्रत करें ।	उन्दु मद कळिट्रन् ओडाद तोळ् वलियन्* नन्द गोपालन् मरुमगळे ! नप्पिन्नाय् !* कन्दम् कमळुम् कुळलि ! कडै तिरवाय्* वन्देङ्गुम् कोळि अळैत्तन काण्* मादवि- प्पन्दल् मेल् पल्काल् कुयिल् इनङ्गळ् कूविन काण्* पन्दार् विरलि ! उन् मैत्तुनन् पेर् पाड* शॆन्दामरै क्कैयाल् शीरार् वळै ऑलिप्प* वन्दु तिरवाय् मगिळ्न्देलोर् एम्बावाय्॥१८॥
	यह पद श्रीवैष्णवों के लिये अति महत्वपूर्ण है। कहा जाता है आचार्य प्रवर भाष्यकार स्वामी श्रीरामानुज स्वामी इस पद को गुनगुनाते हुए एक बार अपने गुरू के दरवाजे पर पहुंचे। गुरू पुत्री ने जब दरवाजा खोला तो वे साष्टांग अडियन के मुद्रा में जमीन पर लेट कर उसे प्रणाम किया। बेटी दौड़ कर अपने पिता को अनपेक्षित स्थिति से अवगत कराया। गुरू ने रामानुज स्वामी से इस पद के स्मरण का सवाल पूछा, और वस्तुस्थिति भी वैसी ही थी कि रामानुज स्वामी उस समय तिरूप्पावै के इसी पद का स्मरण करते हुए गुरू गृह के प्रवेश द्वार पर खड़े थे। फलतः उन्होंने गुरू पुत्री में नीला देवी का दर्शन पाया। इस पद में गोपियां लक्ष्मी नप्पिनाय यानि कि नीला देवी से प्रार्थना करती हैं कि वे यशस्वी ससुर नन्दजी की पुत्रवधु हैं, जो रण में हाथी के उत्साह से अपने चौड़े छाती के साथ शत्रुओं का शमन करते हैं। फिर इनको सुन्दर एवं सुगंधमय केशवाली हैं, कहकर यह याद दिलाती हैं कि कोयल वृक्ष पर आवाज कर सुवह होने का प्रमाण दे रही हैं। आप अपने	

<table>
<tr><td></td><td colspan="2">हाथ में संपूर्ण सृष्टि को गेंदवत रखे हुये रहती हैं। हम आपके पतिदेव का यशगान करने को आये हैं अतः अपने सुन्दर लालिमापूर्ण हाथों से दरवाजा खोलें।

कहते हैं भगवान राम ने जनकपुर के राजपथ से सीता को अपने महल में हाथ से गेंद फेंकने का खेल खेलते देखा था। गेंद का रंग बार बार बदल रहा था। विश्वामित्र जी ने बताया, जमीन पर गेंद का श्वेत रंग सीता जी के नख के रंग को दर्शाता है। हवा में उसका नीला रंग उनकी नीली आंखों का रंग ले लेता है, और हाथ मे लाल रंग उनकी रक्तिम हथेली के रंग का द्योतक है।</td></tr>
<tr><td>19</td><td>तैल दीप "कक्ष में ", हस्ति दंत पैर पलंग पर
कोमल गद्दे सोये
पुष्प गुच्छा सजे बाल, नप्पिनाय "जिनके " वक्षस्थल
रख सिर सोय, विशाल वक्ष स्थल "वाले ", मुंह खोलिये
कजरारे नयनों वाली, अपने पतिदेव
देर ही सही, कभी भी, जगाइये, देखो
क्षणमात्र भी विलगाव आप नहीं चाहती
शुभ स्वभाव वाली, क्या यह न्याय है, आओ श्रीव्रत करें ।</td><td>कुत्तु विळक्कॆरिय कोट्टुक्काल् कट्टिल्मेल्*
मॆत्तॆन्र पञ्च शयनत्तिन् मेल् एरि*
कॊत्तलर् पूङ्गुळल् नप्पिन्नै कॊङ्गै मेल्*
वैत्तु क्किडन्द मलर् मार्बा ! वाय् तिऱवाय् !*
मै त्तडङ्कण्णिनाय् ! नीयुन् मणाळनै*
एत्तनै पोदुम् तुयिलॆळ ऒट्टाय् काण् !*
एत्तनै येलुम् पिरिवाट्रगिल्लायाल्*
तत्तुवम् अन्ऱु तगवेलोर् एम्बावाय्॥१९॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">पद 18, 19 एवं 20 नप्पिनाय को विभिन्न नामों से संबोधित करते हैं। पद 19 में पहले भगवान से प्रार्थना है कि आप दीपों से प्रकाशित कक्ष में हाथी के दांतों से बने पलंग पर नप्पिनाय के वक्षस्थल पर सिर रख सोये हैं , कृपा कर अपना मुंह खोलिये और हमसे कुछ बोलिए। कोई उत्तर न मिलने पर फिर नप्पिनाय से गोपियां कहती हैं कि अब देर हो रही है , सुवह होने को आया, आप इन्हें कभी भी जगाइये , पर जगाइये। यह कहां का न्याय है कि आप इनसे क्षणभर भी अलग नहीं होना चाहती हैं। हमें भी आप से न्याय की प्रार्थना है।

भगवान वैकुंठनाथ त्रिपादविभूति में श्रीदेवी, भूदेवी, एवं नीलादेवी के साथ नित्य विराजमान रहते हैं। गोदम्मा ने इस पद में नीला देवी को नप्पिनाय से संबोधित करते हुए अपनी आगे की प्रार्थना की है। इस प्रसंग में श्री पराशर भट्ट के श्लोक का तिरूप्पावै के पाठ करने के प्रारंभ में सर्वथा स्मरण किया जाता है।</td></tr>
</table>

नीलातुङ्ग स्तनगिरितटी सुप्तमुद्बोध्य कृष्णं ।
पारार्थ्यं स्वं श्रुतिशतशिरस्सिद्धमध्यापयन्ती।।
स्वोच्छिष्टायां स्त्रजिनिगलितं या बलात्कृत्य भुङ्क्ते।
गोदा तस्यै नम इदमिदं भूय एवास्तु भूयः।।

श्रीपराशर भट्ट भाष्यकार रामानुज स्वामी के सर्वप्रिय शिष्य श्री कुरेश स्वामी के पुत्र थे । इनका विष्णु सहस्त्रनाम पर 'भगवद्गुण दर्पण' नाम से व्याख्यान अति प्रसिद्ध रचना है। कहते हैं श्रीरंगम में श्रीपराशर भट्ट को एक बार राजकोप का भाजन बनना पड़ा क्योंकि इन्होनें राजा को मन्दिर विस्तार के निर्माण में श्रीवैष्णवों के तत्कालिन निवास को तोड़ने से मना कर दिया था। उस समय दीर्घ काल तक इन्हें श्रीरंगम से निष्कासित कर दिया गया था और उस अवधि में नप्पिनाय को प्रसन्न करने के लिये इन्होनें उक्त श्लोक से उनकी आराधना की थी।

20		
	तैंतीस "करोड़ " देवताओं के जाते भय दूर करने आप, नायक जागिये पूर्ण सर्वशक्तिशाली, आप दुश्मनों का नाश करें, आप नायक जागिये कुंभवत कोमल कुच, अरूण होंठ, सुन्दर कटि नप्पिनाय, सुन्दर सजनी, जागिये पंखा, दर्पण, हमे देय, अपने पतिदेव जगाइये अभी शीघ्र हम नहा सकें, आओ श्रीव्रत करें ।	मुप्पत्तु मूवर् अमररक्कु मुन् शॆन्ऱु* कप्पम् तविर्क्कुम् कलिये! तुयिल् एळाय्* शॆप्पम् उडैयाय्! तिऱल् उडैयाय्* शॆट्रार्क्कु वॆप्पम् कॊडुक्कुम् विमला! तुयिल् एळाय्* शॆप्पन्न मॆन् मुलै च्चॆव्वाय् च्चिऱु मरुङ्गुल्* नप्पिन्नै नङ्गाय्! तिरुवे! तुयिल् एळाय्* उक्कमुम् तट्टॊळियुम् तन्दुन् मणाळनै* इप्पोदे एम्मै नीराट्टेलोर् एम्बावाय्॥२०॥

इस पद में पुनः भगवान तथा लक्ष्मी दोनों से एक एक कर प्रार्थना है। प्रथम भगवान को गोदम्मा कहती हैं कि आपने तो तैंतीस (करोड़ों : **11** रूद्र , **8** वसु , **12** आदित्य , **2** अश्विनी कुमारों से निःसृत) देवताओं का दुःख दूर किया है।

<table>
<tr><td></td><td colspan="2">कृपा कर जागिये। पुनः लक्ष्मी से प्रार्थना करती हैं तथा उनकी सुन्दरता का बखान करती हैं। पंखा तथा आईना मांगते हुए कहती हैं कि आप नाथ को जगाइये। (पंखा तथा आईना भगवत कैंकर्य के साधन हैं। भगवान अलंकार के बाद आईना में अपना स्वरूप झांक कर देखना चाहते हैं।)</td></tr>
<tr><td>21</td><td>पूर्ण घट से दूध छलके
बहुत दूध दें, दूधारू उदार गउयें
कुमार नन्दगोपन के जागिये
शक्तिशाली बड़े “इस “ जगत “ में “
एक मात्र “प्राण “ दीप दिखें, जागिये
शत्रु पराजित आपके द्वार पड़े
स्वतः आये, आपके चरणाश्रित वैसे हीं
पूजा करें, आये हम, यश गान करें, आओ श्रीव्रत करें ।</td><td>एट्र कलङ्गळ् एदिर् पोङ्गि मीदळिप्प॰
माट्रादे पाल् शोरियुम् वळ्ळल् पेरुम् पशुक्कळ्॰
आट्र प्पडैत्तान् मगने! अरिवुराय्॰
ऊट्रम् उडैयाय्! पेरियाय्!॰ उलगिनिल्
तोट्रमाय् निन्र शुडरे! तुयिल् एळाय्॰
माट्रार् उनक्कु वलि तोलैन्दुन् वाशर्कण्॰
आट्रादु वन्दुन् अडिपणियुमा पोले॰
पोट्रियाम् वन्दोम् पुगळ्न्देलोर् एम्बावाय्॥२१॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">इस पद से गोपियां पुनः भगवान का यशगान करती हैं और उन्हें जगाती हैं। कहती हैं कि आप नन्दजी के लाड़ले हैं जिनके पास अनगिनत गायें हैं और सभी वर्त्तन दूध से भरे रहते हैं। हारे हुए राजागण (जो जरासंध के पराभव के बाद उसके कारागार से स्वतंत्र किये गये) आपके पास शरणागत हुए हैं। हम भी आपकी पूजा करने और गाथा गाने आपके पास आये हैं।</td></tr>
<tr><td>22</td><td>सुन्दर बड़े संसार के राजागन, मान
छोड़ , आपके पलंग “ पैर “ नीचे
एकत्रित, हम आए आप पास
मधुर किंकिणि, मुंह खोलिए, कमल फूल
सुन्दर नयन, थोड़ी सी देखिए हमारी ओर
चंद्र सूर्य वत जागें
दोनो नयन, प्रदान करें हमें, अगर आप खोलें
मृत्यु से त्राण दें, आओ श्रीव्रत करें ।</td><td>अङ्गण् मा ञालत्तरशर्॰ अबिमान
पङ्गमाय् वन्दु निन् पळ्ळिक्कट्टिल् कीळे॰
शङ्गम् इरुप्पार् पोल् वन्दु तलैप्पेय्दोम्॰
किङ्गिणिवाय् च्चेय्द तामरै प्पू प्पोले॰
शेङ्गण् शिरु च्चिरिदे एम्मेल् विळियावो॰
तिङ्गळुम् आदित्तियनुम् एळुन्दार्पोल्॰
अङ्गण् इरण्डुम् कोण्डेङ्गळ्मेल् नोक्कुदियेल्॰
एङ्गळ्मेल् शापम् इळिन्देलोर् एम्बावाय्॥२२॥</td></tr>
</table>

	पद **21** तथा **22** गोदम्मा भगवान को जागने का प्रार्थना करती हैं। सभी राजागण अपना अभिमान छोड़ आपके पलंग के पांवों के पास एकत्रित हैं। उनलोगों की तरह हम भी यहां आये हैं। आप अपनी कृपा कटाक्ष से हमें अनुगृहित करें। कमलनयन सुन्दर आंखें खोलकर सूर्य और चांद की तरह हमारे हृदय को प्रकाशित करें। सुन्दर घुंघुरूओं की तरह आप अपनी आधी खुली हुई सुन्दर आंखों से हमें देखने की कृपा करें। (घुंघुरू आधी खुली हुई आंख की तरह दिखती है)	
23	इस पद में श्री लक्ष्मी नृसिंह वंदना है वर्षा काल, पर्वत गुफा, सपत्नि सोयें धीर सिंह जागें, ज्वालामयी आंखें गर्दन केश झाड़ें सब ओर संभल कर, खड़ा हों, गर्जन करें, तैयार जाने को, विष्णुकांता फूल की तरह आप सुन्दर खड़े हों, आप आयें, आशीष करें, सज्जित सिंहासन विराजें , हमारे आने का उद्देश्य जान अनुगृहित करें, आओ श्रीव्रत करें ।	मारि मलै मुळैञ्जिल् मन्नि क्किडन्दुऱङ्गुम्⋆ शीरिय शिङ्गम् अऱिवुऱ्ऱु त्ती विऴित्तु⋆ वेरि मयिर् पोङ्ग एप्पाडुम् पेर्न्दुदऱि⋆ मूरि निमिर्न्दु मुऴङ्गि प्पुऱप्पट्टु⋆ पोदरुमा पोले नी पूवैप्पू वण्णा⋆ उन् कोयिल् निन्ऱिङ्गने पोन्दरुळि⋆ क्कोप्पुडैय शीरिय शिङ्गाशनत्तिरुन्दु⋆ याम् वन्द कारियम् आरायन्दरुळेलोर् एम्बावाय् ॥ २३ ॥
	यह पद भगवान के लक्ष्मी नृसिंह स्वरूप की प्रार्थना है। वर्षा काल में सोये हुए सिंह जागने पर अपने केश झाड़कर गर्जते हुए खड़ा हों उसी तरह आप अपने सुन्दर श्यामल शरीर से अपने सिंहासन पर विराजमान होकर हमें दर्शन देकर अनुगृहित करें।	

<table>
<tr><td>24</td><td>एक बार संसार मापा गया श्रीचरणों से, हम पूजें
जाकर दक्षिण लंका जीता , हम पूजें
नष्ट किया “शकटासुर “ चक्का ठोकर से, हम पूजें
बछड़ा फेंका “वत्सासुर “ चरण से, हम पूजें
पर्वतराज छत्रवत लिया सौम्य स्वभाव, हम पूजें
जीते दुश्मनों को हाथ के भुजाल से, हम पूजें
इस तरह सेवा कर, हम यशगान कर उद्धार हों
आज हम आये, कृपा करें, आओ श्रीव्रत करें ।</td><td>अन्रिव्वुलगम् अळन्दाय् अडिपोट्रि
शॅन्रङ्गु तॅन् इलङ्गै शॅट्राय् तिरल् पोट्रि
पॉन्र च्चकडम् उदैत्ताय् पुगऴ् पोट्रि
कन्रु कुणिला एरिन्दाय् कऴल् पोट्रि
कुन्रु कुडैयाय् एडुत्ताय् गुणम् पोट्रि
वॅन्रु पगै कॅडुक्कुम् निन् कैयिल् वेल् पोट्रि
एन्रॅन्रुन् शेवगमे एत्ति प्परै कॉळ्वान्
इन्रु याम् वन्दोम् इरङ्गेलोर् एम्बावाय्॥ २४ ॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">भगवान जागकर लक्ष्मी के साथ अब सिंहासनारूढ़ हो गोपियों को दर्शन देगें। पलंग से सिंहासन तक की गति को देखकर गोदम्मा भगवान का मंगलाशासन करती हैं। श्रीचरणों की प्रार्थना मे कहती हैं ः- उन चरणों का मंगलाशासन हो जिनसे त्रिविक्रम अवतार में संसार को मापा, लंका जाकर राक्षसों को जीता, शकटासुर तथा वत्सासुर का नाश किया। पुनः गोवर्धन धारण के लिये मंगलाशासन हो। शत्रुओं को तेज हथियार से जीते, इसके लिये मंगलाशासन हो।</td></tr>
<tr><td>25</td><td>एक सौभाग्यवती के यहाँ जन्मे, एक रात
एक सौभाग्यवती के यहाँ पले छिपे हुए
सह न सका, आपको नुकसान का, सोंचा
सभी चाल विफल हुए, कंस के पेट में
आग की तरह सर्वनायक, आप पास
भिक्षा हेतु, आए हम उद्धार का, देखें आप देंगे
लक्ष्मी जैसा सौंदर्य सेवा अवसर, गान करें
दुःख दूर हो, हों हम खुश, आओ श्रीव्रत करें।</td><td>ऑरुत्ति मगनाय् प्पिरन्दु ओर् इरविल्
ऑरुत्ति मगनाय् ऑळित्तु वळर
तरिक्किलान् आगि त्तान् तीङ्गु निनैन्द
करुत्तै प्पिऴैप्पित्तु क्कञ्जन् वयिट्रिल्
नॅरुप्पॅन्न निन्र नॅडुमाले उन्नै
अरुत्तित्तु वन्दोम् परै तरुदि यागिल्
तिरुत्तक्क शॅल्वमुम् शेवगमुम् याम् पाडि
वरुत्तमुम् तीरन्दु मगिऴ्न्देलोर् एम्बावाय्॥ २५ ॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">इस पद में कृष्णावतार का रहस्य वर्णित है। देवकी के यहां जन्म और यशोदा के यहां लालन पालन तथा कंस का नाश । यशगान से दुःख दूर होकर प्रसन्नता का आशीर्वाद मिले यही गोदम्मा की प्रार्थना है</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>26</td><td>नायक नीलमणि, अगहन का व्रत
पूर्वजों से आ रहा, हम क्या चाहें, अगर आप पूछें
जगत को जगाने वाली, आवाज का
दुग्ध श्वेत, आपके पाञ्चजन्य
की तरह शंख, शक्तिमान
वृहत ढ़ोल, पालंडु गायक
तैल दीप, ध्वज, वृहत छत्र
हे नायक, प्रदान करें, आओ श्रीव्रत करें ।</td><td>माले ! मणिवण्णा ! मार्गळि नीर् आडुवान्*
मेलैयार् शॅय्वनगळ् वेण्डुवन केट्टियेल्*
ञालत्तै एल्लाम् नडुङ्ग मुरल्वन*
पालन्न वण्णत्तुन् पाञ्चजन्नियमे*
पोल्वन शङ्गङ्गळ् पोय् प्पाडुडैयनवे*
शाल प्पॅरुम् परैये पल्लाण्डिशैप्पारे*
कोल विळक्के कॉडिये विदानमे*
आलिन् इलैयाय् ! अरुळेलोर् एम्बावाय्॥ २६ ॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">इस पद में दर्शन पश्चात् गोपियों ने पुरातन काल से अपन पूर्वजों द्वारा मान्य व्रत की सफलतापूर्ण पूर्ति हेतु शंख, ढ़ोल, गायक, दीप, ध्वज, और बड़े छाता की मांग की। ये सभी भगवत कैंकर्य के ऊत्तम साधन हैं।</td></tr>
<tr><td>27</td><td>दुश्मनों को जीतें, वीर गोविंदा, आपके
गीत गायें, हम ढ़ोल का पुरस्कार पायें
सारा देश प्रशंसा करें, आभूषण सुन्दर
कंगन, कंधों का, कान की बाली
पाजेब दूसरे अन्य गहने हम पहनें
सुन्दर वस्त्र धारण करें, तब दूध चावल
घी उत्पलावित, हाथ केहुनी तक "घी ढ़रके"
साथ हम खायें, आओ श्रीव्रत करें ।</td><td>कूडारै वॅल्लुम् शीर् गोविन्दा !* उन् तन्नै–
प्पाडि प्परैकॉण्डु याम् पॅरु शम्मानम्*
नाडु पुगळुम् परिशिनाल् नन्राग*
शूडगमे तोळ्वळैये तोडे शॅवि प्पूवे*
पाडगमे एन्रनैय पल् कलनुम् याम् अणिवोम्*
आडैयुडुप्पोम् अदन् पिन्ने पार् चोरु*
मूड नॅय् पॅय्दु मुळङ्गै वळिवार*
कूडियिरुन्दु कुळिरन्देलोर् एम्बावाय्॥ २७ ॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">भगवान से संवाद होने पर गोपियां अतिप्रसन्न हुई। गोविंद का जयघोष करते हुए ढ़ोल पर प्रभु का यशगान की कामना कीं तथा अपने को आभूषित कर घी मिश्रित खीर भोज का आयोजन करने को ठानी। गोविंद नाम का गान **27, 28,** और **29** पद तक लगातार किया गया है।</td></tr>
</table>

28	गायों के पीछे वन में, हम भोजन करें अनभिज्ञ रहे हम, ग्वालों में आप जन्मे, हमारा बड़ा अहोभाग्य कोई गलती नहीं, गोविंदा आपसे हमारा संबंध टूटे नहीं, न आप तोड़ें निर्दोष बच्चे हम, स्नेह वश छोटे नाम से पुकारें, गुस्सा न करें नाथ हमें उद्धार करें, आओ श्रीव्रत करें ।	‡कऱवैगळ् पिन् शॆन्ऱु कानञ्जेर्न्दुण्बोम्⋆ अऱिवॊन्ऱुम् इल्लाद आय्क्कुलत्तु⋆ उन् तन्नै प्पिऱवि पॆऱुन्दनै प्पुण्णियम् याम् उडैयोम्⋆ कुऱैवॊन्ऱुम् इल्लाद गोविन्दा⋆ उन् तन्नो– डुऱवेल् नमक्किङ्गॊऴिक्क ऒऴियादु⋆ अऱियाद पिळ्ळैगळोम् अन्बिनाल्⋆ उन् तन्नै शिऱुपेर् अऴैत्तनवुम् शीऱियरुळादे⋆ इऱैवा ! नी ताराय् पऱैयेलोर् ऎम्बावाय्॥ २८ ॥
	अब प्रसन्न हो सभी जंगल में सहभोज को चले। गोविंद से गलतियों की क्षमा याचना की और अपना शेष शेषी के चिरंतन संबंध को टिकाऊ रखने की दुहाई कीं।	
29	भोर में, हम पास आये आपके पूजे चरण कमल, प्रशंसा गाये, कृपया सुनें पशु सेवा से जीविका पाया, उसमें जन्में आप भी चढ़ावा हमारा लिये बिना, जायें नहीं आप केवल आज के लिए दया नही चाहिए, देखिए, गोविंदा सात सात जन्म आपके साथ शान्ति शाश्वत सुख हमें मिल, केवल आपके सेवक रहें, अन्य चाह मिटीं रहें, आओ श्रीव्रत करें ।	‡शिट्रम् शिऱुकाले वन्दुन्नै शेवित्तु⋆ उन् पॊट्रामरै अडिये पोट्रुम् पॊरुळ् केळाय्⋆ पॆट्रम् मेय्त्तुण्णुम् कुलत्तिल् पिऱन्दु⋆ नी कुट्रेवल् ऎङ्गळै क्कॊळ्ळामल् पोगादु⋆ इट्रै प्पऱै कॊळ्वान् अन्ऱु काण् गोविन्दा !⋆ ऎट्रैक्कुम् एऴेऴ् पिऱविक्कुम्⋆ उन् तन्नो– डुट्रोमेयावोम् उनक्के नाम् आट्चॆय्वोम्⋆ मट्रै नम् कामङ्गळ् माट्रेलोर् ऎम्बावाय्॥ २९ ॥
	गोपियों के साथ गोदम्मा का यह अंतिम पद है जिसमें गोविंद नाम का गान किया गया है। सुवह की शुरूआत से ही गोविंद नाम का स्मरण प्रारंभ हुआ। गोविंद से इस जीवन का नाता जोड़कर अगले जन्मों तक सबंध बने रहने की कामना कीं। सेवक सेव्य संबंध के अतिरक्त और कोई चाह नहीं रहे, यही अर्न्तमन से गोदम्मा की ईच्छा है।	

30	जहाज से भरे समुद्र मंथन किया, नाथ माधवन, और नाथ केशवन चांद सी सुमुखी अलंकृत किशोरियां, आयीं पूजा कीं पायीं कल्याण श्रेयस, सुन्दर पाठ श्रीविल्लीपुत्तुर का ताजा कमल फूल माला पहनें अर्चक, श्री गोदा कहे सुन्दर तमिल माला तीस का पढ़े नित्य इसे, चार पर्वतों मे फैले वक्षस्थल लाल आंखें, सुन्दर मुख, तिरूमाल "श्रेष्ठ भगवान " से कहीं भी दया पायें, परम सुख पायें, आओ श्रीव्रत करें ।	वङ्ग क्कडल् कडैन्द मादवनै क्केशवनै* तिङ्गळ् तिरुमुगत्तु शेयिळैयार् शॆन्रिरैञ्जि* अङ्ग प्परै कॊण्डवाट्रै* अणि पुदुवै प्पैङ्गमल त्तण् तॆरियल् पट्टर्बिरान् कोदै शॊन्न* शङ्ग त्तमिळ्मालै मुप्पदुम् तप्पामे* इङ्गिप्परिशुरैप्पार् ईरिरण्डु माल् वरै त्तोळ्* शॆङ्गण् तिरुमुगत्तु च्चॆल्व त्तिरुमालाल्* एङ्गुम् तिरुवरुळ् पॆट्रिन्बुरुवर् एम्बावाय् ॥ ३० ॥
	अंतिम पद में गोदम्मा इसके नित्य पाठ का फल बताती हैं। केशव एवं माधव की कृपा की दुहाई देते हुए प्रभु के सुन्दर स्वरूप के ध्यान की सलाह दी हैं।	
	गोदा तस्यै नम इदमिदं भूय एवास्तु भूयः	